अनंत-यात्रा

किवाड़ों की झिरीयों से, बारजों की जालीयों से,
खपरों की दरारों से, समीरा तू बहता चल ।।

कलियों की मुस्कराहट से, छन्दों की गुनगुनाहट से,
पताकों की सरसराहट से, समीरा तू बहता चल ।।

हंसी के कहकहों से, रुदन के विलापों से,
श्वास के आवर्तनों से, समीरा तू बहता चल ।।

बह निकल गलियों से, गाँव-खेत बगियों से,
जोड़ सबको ब्रह्म से, समीरा तू बहता चल ।।

सृष्टि तेरे बहने से, प्राण तेरे प्रवाह से,
प्रज्ञा तेरे चलने से, समीरा तू बहता चल ।।

समीर खांडेकर
२५/०८/२०१३